

## FRDI वधियक की वफिलता : नीत-निरिमाण में अधिक सावधानी बरतने की आवश्यकता

### संदर्भ

वत्तीय समाधान और जमा राशा बीमा वधियक (FRDI), 2017 पर केंद्र द्वारा अचानक लयिा गया यू-टर्न नीत-निरिमाण में सावधानी बरतने की आवश्यकता को दर्शाता है। वधियक, जसिे स्पष्ट रूप से वत्तीय प्रणाली में सुधार और बैंकों की स्थतिको मज़बूत करने के उद्देश्य से लक्षति कयिा गया था, को सार्वजनकि प्रतिक्रयिा के कारण बीच में ही छोड़ना पड़ा।

**नोट :** सरकार द्वारा FRDI वधियक को वापसि लेने के फैसले से संबंधति न्यूज़ 19 जुलाई, 2018 को अपलोड की गई थी। यहाँ हम इस वषिय का वशिलेषण करेंगे।

जमा राशा की सुरक्षा को लेकर भयभीत हुआ आम आदमी

- शायद स्वतंत्र भारत के इतहिस में यह पहली बार हुआ जब आम आदमी सार्वजनकि कषेत्र के बैंकों में जमा राशा की सुरक्षा को लेकर भयभीत था। पेंशनभोगी या एक वृद्ध माँ जसिने अपने जीवन भर की जमा पूंजी बैंक में रखी थी आदजैसे बहुत से लोग इस बारे में सवाल पूछते हुए नज़र आए कि बैंक उनकी जमापूंजी को हड़प लेंगे।

### वधियक के कारण बैंकों को भी हुआ नुकसान

- पछिले वर्ष कई जमाकर्त्ताओं ने इस वधियक के कारण बैंकों से अपनी जमा राशा वापसि ले ली थी।
- भारतीय रज़िर्व बैंक (RBI) के आँकड़ों के अनुसार, सभी अनुसूचति वाणजियकि बैंकों की कुल जमा पूंजी अप्रैल 2018 में 116.84 लाख करोड़ रुपए से घटकर मई 2018 के अंत तक 116.52 लाख करोड़ हो गई थी।
- मांग जमा (Demand Deposit) और सावधजिमा (Fixed Deposit) 1,53,000 करोड़ रुपए से गरिकर 1,52,100 करोड़ रुपए हो गई थी।

### देश में नकदी की कमी का कारण भी FRDI

- हालाँकि इन सभी के लयिा FRDI वधियक को पूरी तरह से ज़मिमेदार नहीं ठहराया जा सकता है फरि भी यह एक प्रवृत्तिको इंगति कर सकता है।
- कुछ ही समय पहले पूरे देश में नकदी के संकट की स्थतिको दिखिाई दी और इस स्थतिको वरषिट बैंकरोँ ने इस वधियक के प्रभाव से जोड़ा था।

### बैंकों की छवहुई खराब

- एक बड़े परपिरेक्ष्य में देखा जाए तो 2016 में बनिा किसी पूर्व तयारी के वमिद्रीकरण जैसी वशाल योजना को लागू करना, ज़रूरतों के अनुसार बैंकों द्वारा ग्राहकों को पर्याप्त नकदी प्रदान करने में असमर्थता और FRDI वधियक ने नश्चिति रूप से बैंकों की छविको खराब कयिा है तथा इससे बैंकों पर लोगों का वशिवास कम हुआ है।

### नीत-निरिमाताओं और जनता के बीच संबंधों की वफिलता

- उपरोक्त घटनाएँ नीत-निरिमाताओं और आम जनता के बीच संबंधों की पूरण वफिलता को दर्शाती हैं।
- यदकि सरकार का इरादा ससि्टम को साफ करना था, तो पहले पूरण पारदर्शति के साथ बड़े पैमाने पर संदेश अभयिान चलाना चाहयि था लेकनि सरकार इस पूरी प्रक्रयिा में चूक गई।
- प्रसूतावति वधियक के 'बेल-इन' प्रावधान की स्पष्टता में कमी और जमा बीमा क्रेडिटि गारंटी अधनियिम के मौजूदा प्रावधानों पर उत्पन्न भ्रम के कारण भी नुकसान हुआ।
- इस पूरे घटनाक्रम में आम आदमी सबसे अधिक परेशान था जसिने कई ऐसे प्रश्नों के जवाब तलाशने की कोशशि की जनिके बारे में उसने यह नहीं सोचा था कि भी ऐसे प्रश्न भी सामने आएंगे।

## नषिकर्ष

- सरकार को जनता के बीच आत्मवश्वास पैदा करने और बना कसी शोर-शराबे के बैंकगि क्षेत्र में सुधारों को शुरू करने के लयि और अधकि व्यावहारकि एवं पारदर्शी नीतयिँ लागू करने की आवश्यकता है ।

इस वषिय पर अधकि जानकारी के लयि क्लकि करें :

- ⇒ [एफ.आर.डी.आई. वधियक के उद्देश्य एवं महत्त्व](#)
- ⇒ [बैंकगि व्यवस्था में बदलाव का नया दौर](#)
- ⇒ [सरकार ने FRDI वधियक को वापसि लेने का लयिा फैसला : बैंकों में जमा पैसा रहेगा सुरक्षति](#)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtiiias.com/hindi/printpdf/frdi-bill-fiasco-more-caution-needed-in-policy-making>

